सामायिक - पाठ

प्रेम भाव हो सब जीवों से, गुणी जनों में हर्ष प्रभो।
करुणा - स्त्रोत बहे दुखियों पर, दुर्जन में मध्यस्थ विभों।।
यह अनन्त बल-शील आत्मा, हो शरीर से भिन्न प्रभो।
ज्यों होती तलवार म्यान से वह उन्नत बल दो मुझको।।

सुख दुख बेरी बन्धु वर्ग में कांच कनक में समता हो।
वन उपवन प्रसाद कुटी में नहीं खेद नहीं ममता हो।।
जिस सुन्दरतम पथ पर चलकर जीते मोह मान मन्मथ।
यह सुन्दर पथ ही प्रभु मेरा बना रहे अनुशीलन पथ।।

एकेंद्रिय आदिक प्राणी की यदि मैंने हिंसा की हो।
शुद्ध हृदय से कहता हूँ वह निष्फल हो दुष्कृत्य प्रभो।।
मोक्ष मार्ग प्रतिकूल प्रवर्तन जो कुछ किया कषायों से।
विपथ गमन सब कालुष मेरे मिट जावे सदभावों से।।

चतुर वैद्य विष विक्षत करता त्यो प्रभु मैं भी आदि उपांत।
अपनी निन्दा आलोचन से करता हूँ पापों को शांत।।
सत्य अहिंसादिक व्रत में भी मैंने हृदय मलीन किया।
व्रत विपरीत प्रवर्तन करके शीलाचरण विलीन किया।।

कभी वासना की सरिता का गहन सलिल मुझपर छाया।
पी पीकर विषयों की मदिरा मुझमें पागलपन आया।।
मैं छली और मायावी हो असत्य आचरण किया।
पर निन्दा गाली चुगली जो मुंह पर आया वमन किया।।

निर अभिराम उज्जवल मानस हो सदा सत्य का ध्यान रहे।
निर्मल जल की सरिता सदृश हिय में निर्मल ज्ञान बहे।।
मुनि चक्री शक्री के हिय में जिस अनंत का ध्यान रहै।
गाते वेद पुराण जिसे वह, परम देव मम हृदय रहे।।

दर्शनज्ञान स्वभावी जिसने सब विकार ही वमन किये।
परम ध्यान गोचर परमात्मा परम देव मम हृदय रहे।।
जो भव दुख का विध्वंषक है विश्व विलोकी जिसका ज्ञान।
योगी जन के ध्यानगम्य वह बसे हृदय में देव महान।।